मेरे नाथ !

सीमा के भीतर असीम प्रकाश पुस्तक से –

(स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज के स्वामी श्री शरणानन्दजी के प्रति विचार)

1) सगुण और निर्गुण दोनोंको ठीक तरहसे जानने वाले बहुत कम हैं | दोनोंसे ऊपर जानेवाले बहुत कम महात्मा हुए हैं | शरणानन्दजी महाराज ऐसे महात्मा थे | परन्तु उनकी बातको हरेक ठीक तरहसे पकड़ नहीं पाता | (page – 15)

2) श्री शरणानन्दजी महाराज कहते हैं कि ' मैंने चेला बनाना शुरू किया; परन्तु चेलोंकी यह आदत है कि गुरूजीको कसकर पकड़ लेते हैं, भगवानको नहीं पकड़ते | तो मैंने चेला बनाना छोड़ दिया' | (page – 27)

3) मेरी द्रष्टिमै वे (श्री शरणानन्दजी महाराज) सबसे श्रेष्ठ महात्मा हैं | उनसे बढकर महात्मा मेरेको कोई दीखता नहीं | पहले जो तत्त्वज्ञ , जीवन्मुक्त महापुरुष हो गये , उन मै भी कोई ऐसा दीखता नहीं | (page – 28)

4) श्री शरणानन्दजी महाराजने कहा कि हमारी आँखें चली गयी तो पहले दुःख हुआ , फिर विचार आया कि हमारे बिना आँखें रह सकती हैं तो हम भी आँखोंके बिना आनन्दसे रह सकते हैं |....जो हमारे बिना रह सकता है , उसके बिना हम भी मौजसे रह सकते हैं | कितनी ऊँची और कितनी सीधी-सरल बात है ! (page – 34)

5) बड़ा भयंकर समय आ रहा है ! इस देशमै बहुत विप्लव होगा | 'गीताप्रेस' और 'मानव-सेवा-संघ' (श्री शरणानन्दजी महाराज) की पुस्तकें दक्षिण भारतमें पचास-सौ जगह सुरक्षित रख देनी चाहिये , जिससे वे बच जाएँ | (page – 43)

6) श्री शरणानन्दजी महाराज महाराजकी पुस्तकमें मैंने पढ़ा है कि अगर गुरु मिल जाय तो बड़ी आफत हो जायगी ! कल्याण होना मुश्किल हो जायगा ! मैंने शरणानन्दजी महाराजके मुखसे सुना है कि 'मेरेको भी चेला बनाना आता है और मैंने चेले बनाये हैं | पर अब वह पेशा छोड़ दिया है; क्योंकि चेला बननेवाले मेरेको पकड़ लेते हैं और भगवानको भूल जाते हैं' | (page – 72)

7) श्री शरणानन्दजी महाराजका मार्मिक वचन है कि 'किसीको दुःख देकर जो सुख लेते हैं , वह (सुख) परिणाममें अनन्त दुःख देता है और किसीको सुख देकर जो दुःख लेते हैं , वह (दुःख) परिणाममें महान आनन्द देता है' | (page – 76)

8) केवल एक बात पकड़ लें कि मेरा भगवानमें प्रेम हो जाय |....कर्मयोग , ज्ञानयोग , तथा भक्तियोग-ये तीनो योग सिद्ध हो जायेंगे |....यह बात मामूली नहीं है | मुझे किसी ग्रन्थमें यह बात मिली नहीं | स्पष्टरूपसे केवल एक जगह सन्तोंकी (श्रीशरणानन्दजी महाराजकी) वाणीमै मिली है | शास्त्रोंकी बात की अपेक्षा अनुभवी सन्तोंकी बात श्रेष्ठ है | (page – 85)

9) अहम् (मैंपन) के साथ जो जानना होता है , उसमें अभिमान होता है; परन्तु अहम् के बिना जो जानना होता है , उसमें अभिमान नहीं होता | इसे शरणानन्दजी महाराजने 'अभिमानशून्य अहम्' कहा है , जो व्यवहारमात्रके लिये होता है | (page -132)

10) शरणानन्दजीसे किसीने पूछा कि आपका गुरु कौन है ? वे बोले कि जो मेरेसे ज्यादा जानता है , वह मेरा गुरु है | फिर पूछा कि आप का चेला कौन है ? वे बोले कि जो मेरेसे कम जानता है , वह मेरा चेला है | (page – 139)

11) शरणानन्दजी महाराजको गुरु ने कहा कि तुम भगवान् के शरण हो जाओ तो वे भगवान् के शरण हो गये , और नाम भी 'शरणानन्द' रख लिया | उनकी पुस्तकें आप पढ़ो तो बड़ी विचित्र बातें मिलेंगी | गीताकी अलौकिक बातें उनमें अपने-आप प्रकट हो गयीं | (page – 145)

12) सन्तोंसे मिलीं ये पाँच बातें आप याद कर लें – १. भगवान् अपने हैं | २. भगवान् अपनेमें हैं | ३. भगवान् अभी हैं | ४. भगवान् सर्वसमर्थ हैं और ५. भगवान् अद्वितीय हैं | ये पाँच बातें मान लें तो आपसे अपने-आप भजन होगा | (page – 205)